The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 2 | March 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

# सनातनकवि आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी के प्रमुख खण्डकाव्यों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय चेतना

**डॉ. मनोज कुमार**

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, एम० एम० महिला महाविद्यालय, आरा, बिहार

**कुमारी नीतू**

शोधार्थी, संस्कृत विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

**लेख विवरण**

**शोधपत्र**

**प्राप्ति तिथि: 20/04/2025**
**स्वीकृति तिथि: 21/04/2025**
**प्रकाशनतिथि: 30/04/2025**

**मुख्य शब्द** : संस्कृत साहित्य, खण्डकाव्य, रेवाप्रसाद द्विवेदी, मतान्तरम्, शरभङ्गम्, शकटारम्, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना।

**सारांश**

संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान-परम्परा, संस्कृति, दर्शन तथा मानवीय जीवन-मूल्यों का समृद्ध भण्डार है। वैदिक वाङ्मय से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य तक इसकी साहित्यिक धारा निरन्तर प्रवाहमान रही है। संस्कृत काव्य की विविध विधाओं में खण्डकाव्य का विशिष्ट स्थान है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ने खण्डकाव्य-विधा को नवीन विषयवस्तु, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक दृष्टि तथा मानवीय संवेदना से समृद्ध किया है। उनके खण्डकाव्यों में भारतीय पौराणिक आख्यानों का नवीन पुनर्पाठ होने के साथ-साथ आधुनिक सामाजिक जीवन की विषमताओं एवं संघर्षों का भी प्रभावपूर्ण निरूपण प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में विशेषतः *मतान्तरम्*, *शरभङ्गम्* तथा *शकटारम्* के आधार पर कवि की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय चेतना का अनुशीलन किया गया है। *मतान्तरम्* में रामायण एवं महाभारत के प्रसिद्ध कथानकों को नवीन वैचारिक दृष्टि प्रदान की गई है, *शरभङ्गम्* में भारतीय अध्यात्म, त्याग, अनासक्ति तथा कर्तव्यपरायणता का निरूपण हुआ है और *शकटारम्* में मानव-प्रताड़ना, वर्णभेद, असमानता तथा सामाजिक अन्याय के विरुद्ध मानवीय स्वर मुखरित हुआ है। इन काव्यों में परम्परा एवं आधुनिकता का समुचित समन्वय प्राप्त होता है। इस प्रकार आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी का खण्डकाव्य-साहित्य आधुनिक संस्कृत काव्य की जीवन्तता, सामाजिक उपयोगिता एवं विश्वमानवीय चेतना को अभिव्यक्त करता है।

## प्रस्तावना

विश्व की प्राचीनतम समृद्ध भाषाओं में संस्कृत का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान, धर्म, दर्शन, संस्कृति तथा साहित्य की दीर्घ परम्परा संस्कृत भाषा में सुरक्षित है। वैदिक वाङ्मय से आरम्भ होकर रामायण, महाभारत, पुराण, दर्शन, काव्य, नाटक तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य तक इसकी ज्ञानधारा सतत् प्रवाहमान रही है। संस्कृत साहित्य की ऐतिहासिक परम्परा का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें प्रत्येक युग के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय जीवन का किसी-न-किसी रूप में प्रतिबिम्ब उपस्थित रहा है। [1][2]

काव्य मानवीय अनुभूति तथा कल्पना की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कवि बाह्य जगत् की घटनाओं को केवल वर्णित नहीं करता, अपितु अपनी संवेदना और प्रतिभा के माध्यम से उन्हें नवीन अर्थ प्रदान करता है। भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य का प्रयोजन सहृदय के हृदय में आनन्द की उत्पत्ति के साथ-साथ उसके चित्त का संस्कार भी माना गया है। इसीलिए संस्कृत काव्य केवल मनोरञ्जन का साधन न होकर सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक चेतना का भी वाहक रहा है। संस्कृत साहित्य के विकास में महाकाव्य, नाटक, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य तथा खण्डकाव्य जैसी अनेक विधाओं ने इस उद्देश्य की पूर्ति की है। [1][10]

खण्डकाव्य संस्कृत प्रबन्धकाव्य की ऐसी महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें सम्पूर्ण जीवन-वृत्त के स्थान पर किसी विशिष्ट घटना, चरित्र, अनुभूति अथवा जीवनांश को काव्य का विषय बनाया जाता है। इसकी लघुता इसके वैचारिक अथवा भावात्मक विस्तार में बाधक नहीं होती। किसी एक प्रसंग को केन्द्र में रखकर कवि व्यापक सामाजिक अथवा दार्शनिक प्रश्नों की अभिव्यक्ति कर सकता है। आधुनिक संस्कृत काव्य-परम्परा में इस विधा ने विशेष विकास प्राप्त किया और कवियों ने पौराणिक विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं समकालीन समस्याओं को भी खण्डकाव्य के माध्यम से व्यक्त किया। [3]

आधुनिक संस्कृत साहित्य के इसी विकासक्रम में सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वे बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न कवि, काव्यशास्त्रज्ञ एवं संस्कृतविद् रहे हैं। उन्होंने महाकाव्य, नाटक, काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ तथा अनेक खण्डकाव्यों की रचना की। उनकी साहित्य-साधना में परम्परा के प्रति श्रद्धा है, किन्तु वह परम्परा का यान्त्रिक अनुसरण नहीं है।

उनके काव्य में प्राचीन आख्यान नवीन अर्थ प्राप्त करते हैं और आधुनिक जीवन के प्रश्न संस्कृत काव्य के योग्य विषय बनकर सामने आते हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य में उनकी रचनात्मक प्रतिभा का यह पक्ष विशेष उल्लेखनीय है। [4]

आचार्य द्विवेदी द्वारा विरचित *मतान्तरम्*, *शरभङ्गम्* तथा *शकटारम्* उनकी काव्यदृष्टि के तीन भिन्न किन्तु परस्पर सम्बद्ध आयामों को प्रकाशित करते हैं। *मतान्तरम्* प्राचीन आख्यानों के परम्परागत मूल्यांकन के स्थान पर नवीन दृष्टि प्रस्तुत करता है; *शरभङ्गम्* भारतीय अध्यात्म एवं जीवन-दर्शन को प्रतिष्ठित करता है; जबकि *शकटारम्* आधुनिक समाज में व्याप्त मानव-प्रताड़ना, असमानता एवं वर्णभेद के प्रश्न को सामने लाता है। इस दृष्टि से ये काव्य क्रमशः वैचारिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि माने जा सकते हैं। [5][8][9]

*मतान्तरम्* शीर्षक स्वयं कवि की वैचारिक दृष्टि का परिचायक है। 'मतान्तर' का सामान्य अर्थ प्रचलित मत से भिन्न मत अथवा किसी विषय को दूसरी दृष्टि से देखना है। इस काव्य में रामायण तथा महाभारत के सुविख्यात कथानकों एवं पात्रों को आधार बनाकर कवि उन प्रश्नों को सामने लाता है जो परम्परागत कथाव्याख्या में प्रायः गौण रह जाते हैं। इसका आशय मूल आख्यानों का निषेध नहीं है, अपितु उन पर नवीन दृष्टि से विचार करना है। इस प्रकार कवि प्राचीन कथाओं की पुनर्व्याख्या करते हुए सहृदय को स्वतंत्र विचार की ओर प्रेरित करता है। [5]

रामायण तथा महाभारत भारतीय सांस्कृतिक चेतना के आधारभूत ग्रन्थ हैं। इनके पात्र केवल कथा-पात्र न रहकर भारतीय सामाजिक और नैतिक जीवन के प्रतीक बन गए हैं। राम, भरत, कैकेयी, सुग्रीव, बाली, रावण आदि रामायण से तथा श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीष्म, द्रोण और अन्य पात्र महाभारत से भारतीय समाज की स्मृति में गहराई से जुड़े हुए हैं। मूल रामायण और महाभारत में इन पात्रों के माध्यम से धर्म, कर्तव्य, सत्य, न्याय, राजधर्म, पारिवारिक सम्बन्ध एवं मानव-व्यवहार से जुड़े अनेक जटिल प्रश्न उपस्थित हुए हैं। [6][7]

आचार्य द्विवेदी *मतान्तरम्* में इन्हीं कथाओं को आधुनिक वैचारिक चेतना से जोड़ते हैं। उनके लिए परम्परा श्रद्धा का विषय होते हुए भी विमर्श से परे नहीं है। किसी पात्र के सम्बन्ध में समाज द्वारा निर्मित एकांगी धारणा को अन्तिम सत्य न मानकर उसके दूसरे पक्ष पर भी विचार करना साहित्य की सृजनात्मक स्वतन्त्रता है।

इस अर्थ में *मतान्तरम्* आधुनिक मनुष्य की प्रश्नाकुलता तथा तार्किक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। [5] यह दृष्टि वर्तमान समाज में भी विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि किसी परम्परा की वास्तविक जीवन्तता तभी सुरक्षित रहती है जब उसमें आत्मपरीक्षण तथा पुनर्विचार की क्षमता बनी रहती है।

*मतान्तरम्* में सामाजिक चेतना का स्वर इस तथ्य में निहित है कि कवि पाठक को पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष प्रदान करने के बजाय विचार की प्रक्रिया में सम्मिलित करता है। धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय और नीति-अनीति के प्रश्न अनेक बार परिस्थिति-सापेक्ष होते हैं। महाभारत का व्यापक कथानक स्वयं इस जटिलता का प्रमाण प्रस्तुत करता है, जहाँ एक ही घटना के अनेक नैतिक आयाम सामने आते हैं। [7] आचार्य द्विवेदी इसी सम्भावना को आधुनिक खण्डकाव्य के स्तर पर विकसित करते हैं। फलतः *मतान्तरम्* पौराणिक कथाओं का पुनर्कथन मात्र नहीं रह जाता, वह एक वैचारिक विमर्श बन जाता है। [5]

आचार्य द्विवेदी की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का अत्यन्त प्रभावशाली स्वरूप *शरभङ्गम्* में दिखाई देता है। इस खण्डकाव्य का कथानक रामायण के महर्षि शरभङ्ग से सम्बद्ध है। रामायण में दण्डकारण्य तथा वहाँ स्थित ऋषियों के आश्रम भारतीय तप, त्याग एवं आध्यात्मिक साधना के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में वर्णित हैं। [6] आचार्य द्विवेदी ने महर्षि शरभङ्ग के चरित्र को आधार बनाकर भारतीय जीवन-दर्शन के उस स्वरूप को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है जिसमें बाह्य भौतिक जीवन और आन्तरिक आध्यात्मिक उन्नति के मध्य सन्तुलन को महत्त्व दिया गया है। [8]

भारतीय जीवन-दृष्टि भौतिक पदार्थों का सर्वथा निषेध नहीं करती। मनुष्य शरीरधारी है, अतः उसके लिए जीवन-निर्वाह के साधन आवश्यक हैं; किन्तु भारतीय दर्शन भौतिक पदार्थों में अत्यधिक आसक्ति को आत्मोन्नति के मार्ग में बाधक मानता है। महर्षि शरभङ्ग का चरित्र इसी अनासक्ति का उदाहरण बनकर प्रस्तुत होता है। मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए संसार में रहे, किन्तु भौतिक पदार्थ ही उसके जीवन का अन्तिम उद्देश्य न बन जाएँ—यह भावना *शरभङ्गम्* की केन्द्रीय आध्यात्मिक संवेदना से जुड़ी हुई है। [8]

यह दृष्टि केवल किसी प्राचीन ऋषि के जीवन तक सीमित नहीं है। आधुनिक भौतिकतापरक युग में इसकी उपयोगिता और अधिक स्पष्ट होती है। आज मनुष्य ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से अपार भौतिक सुविधाएँ प्राप्त की हैं, किन्तु सुविधा की वृद्धि अपने-आप मानसिक शान्ति, नैतिकता अथवा जीवन-सन्तोष

प्रदान नहीं करती। अनियन्त्रित उपभोग, प्रतिस्पर्धा और भौतिक सफलता को ही जीवन की पूर्णता मानने की प्रवृत्ति मनुष्य के मानसिक एवं सामाजिक जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है। ऐसी स्थिति में *शरभङ्गम्* में प्रतिपादित संयम, अनासक्ति, कर्तव्य एवं आध्यात्मिक चेतना आधुनिक समाज के लिए भी अर्थपूर्ण सिद्ध होती है। [8]

आचार्य द्विवेदी की विशेषता यह है कि वे एक ओर रामायण तथा महाभारत के कथानकों से आधुनिक समाज के लिए अर्थ ग्रहण करते हैं और दूसरी ओर अपने काव्य को आधुनिक विश्व की समस्याओं से भी सम्बद्ध करते हैं। इसका सशक्त प्रमाण *शकटारम्* है। कवि ने इस रचना में मानव-प्रताड़ना को काव्य का विषय बनाया है। [9] वर्णभेद, सामाजिक असमानता, शक्तिशाली वर्ग द्वारा दुर्बल वर्ग पर अत्याचार तथा मानव-मर्यादा का हनन आधुनिक इतिहास की गम्भीर समस्याएँ रही हैं। संस्कृत जैसी प्राचीन एवं शास्त्रीय भाषा में इन आधुनिक मानवीय समस्याओं का काव्यात्मक निरूपण स्वयं आधुनिक संस्कृत साहित्य की जीवन्तता का प्रमाण है।

*शकटारम्* में दक्षिण अफ्रीका की सामाजिक परिस्थितियों तथा अश्वेत समुदाय के संघर्ष की पृष्ठभूमि के माध्यम से कवि मानव-मात्र की समानता का पक्ष प्रस्तुत करता है। [9] किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी त्वचा के रंग, जाति, जन्म अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर करना मानवता के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध है। मानव की वास्तविक प्रतिष्ठा उसके मनुष्य होने में है। अतः किसी भी व्यवस्था में यदि व्यक्ति की स्वाभाविक गरिमा का हनन होता है तो साहित्य का संवेदनशील हृदय उसके प्रति उदासीन नहीं रह सकता।

इस काव्य की सामाजिक चेतना किसी एक विशेष समुदाय तक सीमित नहीं है। कवि पीड़ा को सार्वभौमिक मानवीय अनुभव के रूप में ग्रहण करता है। उत्पीड़ित मनुष्य के प्रति करुणा और उत्पीड़क व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध—ये दोनों भाव *शकटारम्* को मानवतावादी काव्य बनाते हैं। [9] इसके माध्यम से संस्कृत काव्य भारतीय सांस्कृतिक सीमा से आगे बढ़कर विश्वमानवीय संवेदना को आत्मसात् करता है। इस प्रकार आधुनिक संस्कृत काव्य यह सिद्ध करता है कि उसकी विषय-वस्तु केवल देवकथा और प्राचीन राजवंशों तक सीमित नहीं है; वह आधुनिक राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ एवं मानवाधिकार के प्रश्नों को भी अभिव्यक्त कर सकता है। [3]

आचार्य द्विवेदी के इन तीनों खण्डकाव्यों का भावपक्ष भी उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि को पुष्ट करता है। भारतीय काव्यशास्त्र में रस को काव्य की अनुभूति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना गया है। भरतमुनि की रसपरम्परा से लेकर साहित्यदर्पण, काव्यप्रकाश तथा अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों तक विभाव, अनुभाव, स्थायीभाव एवं व्यभिचारी भावों के माध्यम से सहृदय में उत्पन्न रसात्मक अनुभूति पर विचार किया गया है। [10][11][12] भाव और रस ही किसी विचार को शुष्क उपदेश बनने से बचाकर काव्यानुभव में रूपान्तरित करते हैं।

*शकटारम्* में पीड़ित मानव की अवस्था सहृदय के अन्तःकरण में करुणा जागृत करती है। अन्याय और अमानवीय व्यवहार से उत्पन्न क्षोभ रौद्रभाव की दिशा में जाता है तथा उसके विरुद्ध संघर्ष का संकल्प वीरभाव की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार एक ही सामाजिक समस्या करुणा, आक्रोश और प्रतिरोध जैसे विविध भावों को उत्पन्न करती है। *शरभङ्गम्* की भावभूमि इसके विपरीत अधिक संयत, आध्यात्मिक और अन्तर्मुखी है, जिसमें तप, त्याग, आत्मसंयम तथा अनासक्ति प्रमुख हैं। *मतान्तरम्* में भावात्मकता के साथ वैचारिकता का अधिक प्रभाव दिखाई देता है; यहाँ सहृदय को स्थापित मान्यताओं पर पुनर्विचार करना पड़ता है। [5][8][9]

शारदातनय के *भावप्रकाश* जैसे काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में भाव एवं रस के विविध आयामों का विस्तार से निरूपण भारतीय साहित्यचिन्तन की इसी समृद्ध परम्परा को पुष्ट करता है। [13] आचार्य द्विवेदी स्वयं काव्यशास्त्रीय परम्परा के मर्मज्ञ थे, इसलिए उनकी काव्यरचना में विचार एवं अनुभूति का सम्बन्ध सहज दिखाई देता है। सामाजिक संदेश उनके यहाँ केवल प्रत्यक्ष उपदेश के रूप में उपस्थित नहीं होता, बल्कि चरित्र, परिस्थिति एवं भावात्मक विन्यास के माध्यम से सहृदय तक पहुँचता है।

तीनों काव्यों को समग्र रूप में देखने पर कवि की एक विशिष्ट विकासोन्मुख सांस्कृतिक दृष्टि सामने आती है। उनके लिए भारतीय परम्परा अत्यन्त मूल्यवान है, परन्तु वह स्थिर अथवा जड़ नहीं है। *मतान्तरम्* में परम्परा का पुनर्मूल्यांकन है, *शरभङ्गम्* में परम्परा के शाश्वत आध्यात्मिक मूल्यों का पुनः प्रतिष्ठापन है और *शकटारम्* में भारतीय मानववादी दृष्टि का आधुनिक वैश्विक समस्या के साथ संवाद है। [5][8][9] इस प्रकार कवि अतीत एवं वर्तमान को विरोधी रूप में नहीं देखता, बल्कि अतीत के मूल्यवान तत्त्वों को वर्तमान की आवश्यकताओं से सम्बद्ध करता है।

इसी बिन्दु पर आचार्य द्विवेदी का काव्य आधुनिक संस्कृत साहित्य की व्यापक प्रवृत्ति से सम्बद्ध दिखाई देता है। आधुनिक संस्कृत काव्य ने पौराणिक आख्यानों को ग्रहण करते हुए भी समकालीन चेतना को स्वीकार किया है। [3] आधुनिक संस्कृत कवि प्राचीन भाषा के माध्यम से आधुनिक अनुभवों को अभिव्यक्त करता है और इस प्रक्रिया में संस्कृत की अभिव्यक्ति-क्षमता का विस्तार करता है। आचार्य द्विवेदी के खण्डकाव्य इस प्रवृत्ति के उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

उनके काव्यों में समाज-सुधार का स्वर भी उल्लेखनीय है। साहित्य का उद्देश्य समाज के लिए प्रत्यक्ष विधान बनाना नहीं है, किन्तु साहित्य मनुष्य की संवेदना एवं विचार को प्रभावित करके सामाजिक परिवर्तन की मानसिक भूमि तैयार कर सकता है। *मतान्तरम्* व्यक्ति को बिना विचार के किसी मान्यता को स्वीकार करने से पूर्व उसके विभिन्न पक्षों पर विचार करने की प्रेरणा देता है। [5] *शरभङ्गम्* भौतिकता और आध्यात्मिकता के मध्य सन्तुलन का सन्देश देता है। [8] *शकटारम्* मानव-मानव के मध्य कृत्रिम भेदभाव एवं अन्याय के विरोध में समानता और मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा करता है। [9]

इन तीनों रचनाओं में क्रमशः बौद्धिक स्वतंत्रता, आत्मिक उन्नति और सामाजिक न्याय का स्वर सुना जा सकता है। वस्तुतः ये तीनों ही किसी स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक हैं। विचार की स्वतंत्रता के अभाव में समाज रूढ़ हो जाता है; आध्यात्मिक अथवा नैतिक आधार के अभाव में उसका भौतिक विकास दिशाहीन हो सकता है; और सामाजिक न्याय के अभाव में उसकी व्यवस्था शोषणकारी बन सकती है। आचार्य द्विवेदी के विवेच्य खण्डकाव्यों में इन तीनों क्षेत्रों के प्रति सजगता विद्यमान है।

यहाँ यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि कवि सामाजिक अथवा सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति के लिए किसी एक प्रकार के कथानक पर निर्भर नहीं रहता। *मतान्तरम्* में रामायण-महाभारत के पात्र हैं, *शरभङ्गम्* में ऋषि-परम्परा है और *शकटारम्* में आधुनिक सामाजिक इतिहास है। [5][8][9] विषयों की यह विविधता आधुनिक संस्कृत खण्डकाव्य की व्यापक सम्भावनाओं को दर्शाती है। इससे यह धारणा निरस्त होती है कि संस्कृत में केवल पौराणिक अथवा धार्मिक विषयों की ही अभिव्यक्ति सम्भव है।

वाल्मीकीय रामायण एवं व्यासकृत महाभारत भारतीय साहित्य में सतत् पुनर्सृजन की प्रेरणा देते रहे हैं। [6][7] विभिन्न कालों के कवियों ने इन कथाओं को अपनी युगीन संवेदना के अनुरूप ग्रहण किया है।

आचार्य द्विवेदी भी इसी सृजनात्मक परम्परा के उत्तराधिकारी हैं, किन्तु उनका वैशिष्ट्य यह है कि वे कथा के भीतर निहित प्रश्नों को आधुनिक दृष्टि से पुनः सक्रिय करते हैं। इस कारण उनका पौराणिक आधार वर्तमान से विच्छिन्न नहीं रहता।

वर्तमान समय में भी इन खण्डकाव्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। सामाजिक जीवन में पूर्वाग्रह, असमानता, जातीय अथवा नस्लीय भेदभाव तथा मूल्य-संकट अभी पूर्णतः समाप्त नहीं हुए हैं। इसी प्रकार आधुनिक मनुष्य के सामने भौतिक विकास एवं आन्तरिक शान्ति के मध्य सन्तुलन का प्रश्न भी उपस्थित है। साथ ही परम्परा एवं आधुनिक विवेक के बीच स्वस्थ संवाद की आवश्यकता निरन्तर बनी हुई है। इन परिस्थितियों में *मतान्तरम्*, *शरभङ्गम्* और *शकटारम्* के मूल प्रश्न केवल अपने रचनाकाल तक सीमित नहीं रहते, बल्कि आज के समाज में भी विचारणीय बने हुए हैं।

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी के प्रमुख खण्डकाव्य आधुनिक संस्कृत साहित्य की सशक्त उपलब्धियाँ हैं। *मतान्तरम्* में रामायण एवं महाभारत के प्रसिद्ध कथानकों का नवीन वैचारिक दृष्टि से पुनर्पाठ करते हुए कवि स्वतंत्र चिन्तन एवं विमर्श की चेतना को विकसित करता है। [5] *शरभङ्गम्* महर्षि शरभङ्ग के चरित्र के माध्यम से भारतीय आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि, कर्तव्य, त्याग एवं अनासक्ति का सन्देश प्रदान करता है। [8] *शकटारम्* आधुनिक समाज में व्याप्त मानव-प्रताड़ना, वर्णभेद तथा असमानता के विरुद्ध मानवीय समानता एवं न्याय का स्वर प्रस्तुत करता है। [9]

इन काव्यों में परम्परा आधुनिकता की विरोधिनी न होकर उसकी सहचरी बनकर सामने आती है। कवि प्राचीन आख्यानों से जीवन-मूल्य ग्रहण करता है, उन्हें नवीन प्रश्नों से जोड़ता है और आधुनिक विश्व की समस्याओं को भी संस्कृत काव्य का अंग बनाता है। इस प्रकार उनका खण्डकाव्य-साहित्य भारतीय संस्कृति, सामाजिक दायित्व तथा विश्वमानवीय संवेदना के मध्य सेतु का कार्य करता है। आचार्य द्विवेदी की यह काव्यदृष्टि आधुनिक संस्कृत साहित्य की जीवन्तता एवं उसकी सामाजिक प्रासंगिकता को प्रमाणित करती है।

## सन्दर्भ

**[1]** उपाध्याय, आचार्य बलदेव, ***संस्कृत वाङ्मय का इतिहास***, **उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान**, सप्तम खण्ड, 2000।

**[2]** त्रिपाठी, डॉ. राधावल्लभ, ***संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास***।

**[3]** मुसल-गाँवकर, श्री केशव, ***आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा***।

**[4]** शुक्ल, विजय शंकर एवं द्विवेदी, सदाशिव कुमार (सम्पा.), ***संस्कृत साहित्य के वटवृक्ष***।

**[5]** द्विवेदी, **सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद**, *मतान्तरम्*, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी, 2001।

**[6]** वाल्मीकि, *रामायण*, गीता प्रेस, गोरखपुर।

**[7]** वेदव्यास, *महाभारत*, गीता प्रेस, गोरखपुर।

**[8]** द्विवेदी, **सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद**, *शरभङ्गम्*, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी, 2001।

**[9]** द्विवेदी, **सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद**, *शकटारम्*, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी, 2001।

**[10]** विश्वनाथ, आचार्य, ***साहित्यदर्पण***, व्याख्याकार-आचार्य शोभराज शर्मा 'रेग्मी', **चौखम्बा कृष्णदास** अकादमी, वाराणसी।

**[11]** मम्मट, आचार्य, *काव्यप्रकाश*, व्याख्याकार-आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि।

**[12]** भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, **सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय**, वाराणसी।

**[13]** शारदातनय, *भावप्रकाश*, **सम्पादक-सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद द्विवेदी एवं प्रो.** सदाशिव कुमार द्विवेदी, **इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र**, 2022।